आशीष की अद्‌भुत सामर्थ्य

रिचर्ड ब्रटंन

आशीष की अद्भुत सामर्थ्य

रिचर्ड ब्रटंन

आशीष की अद्भुत सामथ्य
(Aashish Ki Adbhut Samarthya)
Published by Richard Brunton
New Zealand

© 2017 Richard Brunton

ISBN 978-0-473-39096-9 (Softcover)
ISBN 978-0-473-39097-6 (PDF)

Editing:
Special thanks to
Joanne Wiklund and Andrew Killick
for making the story more readable
than it might otherwise have been!

Production & Typesetting:
Andrew Killick
Castle Publishing Services
www.castlepublishing.co.nz

Cover design:
Paul Smith

Printed in New Zealand

Scripture quotations are taken from
the New King James Version®.
Copyright © 1982 by Thomas Nelson, Inc.
Used by permission. All rights reserved.

ALL RIGHTS RESERVED

No part of this publication may be reproduced,
stored in a retrieval system, or transmitted
in any form or by any means, electronic, mechanical,
photocopying, recording or otherwise,
without prior written permission from the publisher.

विषय – सूची

प्रस्तावना 5
परिचय 7

भाग एकः आशीष क्यों? 11
एक अंतरदृष्टि 13
हमारे बोलने की सामर्थ 17
अच्छा बोलने से आशीष देने की ओर बढ़नाः हमारी बुलाहट 20
मसीही आशीष क्या है? 22
हमारा आत्मिक अधिकार 25
आशीष देना निवेदन करने से भिन्न है 32

भाग दोः इसे कैसे करें 35
एक महत्वपूर्ण सिद्धांत 37
विभिन्न स्थितियां जिनका हम सामना कर सकते है 39
उनको आशीष देना जो आपको गाली या श्राप देते हैं 39
उन्हें आशीष देना जो आपको भड़काते हैं 41
अपने आपको आशीष देना, बजाय श्राप देने के 44
श्रापों को पहचानना और तोड़ना 44

किसी के मुंह को आशीषित करना	46
किसी के दिमाग को आशीषित करना	47
अपने शरीरों को आशीषित करना	48
अपने घर, विवाह और बच्चों को आशीषित करना	53
एक पिता की आशीष	60
भविष्यवाणी लाने के द्वारा दूसरों को आशीषित करना	63
अपने काम करने के स्थान को आशीषित करना	64
एक समाज को आशीषित करना	66
भूमि को आशीषित करना	68
प्रभु को आशीष देना	70
प्रयोग	72
एक मसीही कैसे बनें	74

प्रस्तावना

मैं आपको इस छोटी पुस्तक को, इसके सामर्थशाली संदेश के साथ, पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करता हूं – आप बदल जाएंगे!

जब एक सुबह रिचर्ड ब्रंटन और मैं नाश्ता कर रहे थे तब उन्होंनें बताया कि परमेश्वर ने उनपर आशीष के सामर्थ के विषय में क्या प्रकट किया है, और उसी समय मैं समझ गया कि इसमें दूसरों के जीवन पर प्रभाव डालने की कितनी क्षमता है।

मैंने उनके संदेश की फिल्म बनाई अपनी कलीसिया के पुरुषों के कैँम्प में दिखाने के लिए। उपस्थित पुरुषों को वह इतनी अच्छी लगी कि उन्हें लगा कि इसे पूरी कलीसिया को सुनना चाहिए। लोग इसका अपने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में इस्तेमाल करने लगे और इसके परिणाम स्वरुप हम अद्‌भुत गवाहियां सुनने लगे। एक व्यवसायी ने बताया कि उसका व्यवसाय दो सप्ताह में "कुछ नहीं" से "लाभ" तक पहुंच गया है। अन्य लोग शारीरिक चंगाई पा रहे थे जैसे जैसे वे अपने शरीरों को आशीष दे रहे थे।

इस संदेश को सुने जाने के लिए अन्य अवसर खुलने लग गए। मुझे “गैदरिंग ऑफ जनरल्स” नाम के कार्यक्रम (जहां कर्ली सिया के पासबान सीखने और तरोताज़ा होने के लिए आते हैं) में बोलना था, जो कि युगान्डा और केन्या में था। उस सफर पर रिचर्ड मेरे साथ आए और उन्होंने आशीष के विषय पर एक सेशन किया। वह संदेश लंबे समय से दफन खालीपन और दर्द को चीरता हुआ निकल गया। उपस्थित लोगों में अधिकतर ने कभी अपने पिता से आशीष नहीं पाई थी और जैसे रिर्चड ने उस भूमिका में खड़े होकर उनको आशीषित किया, कई लोग रो रहे थे और भावनात्मक और आत्मिक स्वतंत्रता का अनुभव कर रहे थे और उसी के साथ उनके जीवनों में तुरंत बदलाव भी दिखाई दे रहा था।

कैसे आशीषित करना है इस बात को जानने से मेरे जीवन पर ऐसा असर हुआ कि अब मैं मौके ढूंढता हूं लोगों को आशीषित करने के ‘शब्दों और कार्यो से’ – जो मैं कहता हूं और करता हूं उसके द्वारा। आपको इस छोटी पुस्तक से आनंद मिलेगा, और यदि आप जीवन में इसे लागू करेंगे, तो आप बहुतायत से फलवंत होंगे और परमेश्वर के राज्य के लिए इस्तेमाल होंगे।

जौफ विकलुंड, सिनियर पास्टर
इडन असेम्बली ऑफ गॉड,
अध्यक्ष, प्रौमिस कीपर्स मेन्स मिनिस्ट्री,
ऑक्लैंड, नयू ज़ीलैंड

परिचय

जब मैंने आशीष देने की एहमियत को जाना, तो यह बाइबल के उस व्यक्ति जैसा था जिसने खेत में छिपे खज़ाने को पा लिया था। मैंने उत्साह पूर्वक अपने विचार और अनुभव पास्टर जौफ विकलुण्ड से बांटे और उन्होंनें मुझसे उन्हें फरवरी 2015 में एक कॅम्प में उनकी कलीसिया के पुरुषों से बताने के लिए कहा। वे इतने प्रभावित हुए कि वे चाहते थे कि पूरी कली सिया इसे सुने।

जब मै उस कलीसिया में बोल रहा था, तो उस दिन करिज़मा क्रिसचन मिनिस्ट्रीज़ के रेवरेंड ब्रायन फ्रांस और प्रौमिस कीपर्स, न्यूज़ीलैंड के पॉल सबरित्ज़की भी वहां मौजूद थे। इसका परिणाम यह निकला कि मैंने इस संदेश को करिज़मा न्यूज़ीलैंड और फिजी, और प्रौमिस कीपर्स के पुरुषों के साथ भी बांटा। कइयों ने इसे गंभीरता से लिया और तुरंत इसे लागू भी किया और उत्कृष्ट परिणाम भी देखे। कुछ लोंगों ने टिप्प णी की कि उन्होंने परमेश्वर के राज्य के इस पहलू पर पहले कभी शिक्षा नहीं पाई थी।

आशीष की सेविकाई तेज़ी से बढ़ रही थी। (क्या परमेश्वर नहीं कहता, 'एक मनुष्य का वरदान उसके लिए जगह बनाएगा?) 2015 के अंत में, मैं पास्टर जौफ के साथ केन्या और युगाण्डा गया। वे "गेदरिंग ऑफ जनरल्स" में उपस्थित सैंकड़ों पासबानों की सेविकाई कर रहे थे। यह एक वार्षिक सम्मेलन था जिसमे प्रतिनिधि प्रेरणा और सहायता की आशा से आते थे, और जौफ को लगा कि आशीष पर मेरी शिक्षा मर्द दगार होगी। और हुआ भी ऐसा ही। केवल पासबानों को ही नहीं, परन्तु अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया और दक्षिण अफ्रिका से आए अन्य वक्ताओं को भी लगा कि यह एक सामर्थशाली संदेश है और उन्होंने मुझे इसे बड़े पैमाने पर फैलाने की कोशिश करने के लिए प्रोत्साहित किया।

मैं कोई वेबसाईट बनाना और उसे संभालना नहीं चाहता था, और नाही विस्तार से कुछ लिखना चाहता था जब पहले से ही इसके लिए इतनें उत्कृष्ट लोग मौजूद हैं। आशीष का संदेश बहुत सरल है – आसानी से प्रयोग किया जा सकता – और मैं नहीं चाहता था कि इसकी सरलता किसी जटिलता में खो जाए – इस छोटी पुस्तक का यही कारण है।

मैंने इस पुस्तक में हवाला दिया है कैरी कर्कवुड द्वारा लिखित "द पावर ऑफ ब्लेसिंग", रॉय गॉडविन और डेव रॉबर्ट्स द्वारा लिखित "द ग्रेस आउटपोरिग: बिकमिंग अ पीपल ऑफ ब्ले

सिंग", फ्रैंक हॅम्मण्ड द्वारा लिखित "द फादर्स ब्लेसिंग" और मॉरिस बर्किस्ट द्वारा लिखित "द मिरकल ऐण्ड पावर ऑफ ब्लेसिंग" से। निश्चित रुप से मैंने अन्य लोगों से और अन्य पुस्तकों से भी प्राप्त किया है, लेकिन इतने सालों में सबकुछ मिश्रित हो गया है।

आशीष की सामर्थ को जान लेना किसी के भी लिए एक नए जीवन की राह खोल देगा जो उसपर कदम उठाएगा। मैं अब अधिकतर दिन लोगों को आशीषित करता हूं – विश्वासियों और अविश्वासियों को – चाय की दुकानों, रेस्तराओं, होटलों में और सड़कों पर भी। मैंने अनाथों, अनाथालय के स्टाफ, हवाई जहाज़ पर एक एयर होस्टेस, फल के बागों, जानवरों, बटुवों, व्यवसायों और शारीरिक बिमारी से त्रस्त लोगों को आशीषित किया है। मैंने व्यस्क पुरुष और महिलाओं को मेरे सीने पर सिर रख रोता पाया है जैसे मैंने उनपर एक पिता की आशीष का ऐलान किया।

अक्सर मुझे नतीजे देखने को नहीं मिलते, लेकिन फिर भी मैनें काफी देखा हैं यह जानने के लिए कि आशीष जीवनों को बदल देती है। और उसने मेरे जीवन को भी बदला है।

आशीष देना परमेश्वर का स्वभाव है, और हम जो उसके स्वरुप में बनाए हुए जीव हैं, हमारा मौलिक आत्मिक स्वभाव

भी ऐसा ही है। पवित्र आत्मा प्रतिक्षा कर रहा है कि परमेश्वर के लोग, यीशु द्वारा उनके लिए हासिल किए विश्वास और अधिकार में कदम उठाएंगे, ताकि जीवनों को बदल सकें।

मैं निश्चित हूं कि आप इस पुस्तिका को लाभदायक पाएंगे। यीशु ने हमें सामर्थहीन नहीं छोड़ा है। सभी प्रकार की स्थितियों में आशीष बोलना एक ऐसा अन्देखा किया हुआ अनुग्रह है जिसमें दुनिया को बदल देने की क्षमता है।

आनंद लें।
रिचर्ड ब्रंटन

भाग एक :

आशीष क्यों?

एक अंतरदृष्टि

मेरी पत्नी निकोल न्यू केलडोनिया की रहने वाली है, और इसका अर्थ है कि मेरे लिए फ्रेंच बोलना सीखना और उसकी जन्मभूमि, नोमिया, में अच्छा खासा समय बिताना ज़रुरी था। हालांकि, न्यू केलडोनिया प्रमुखतया एक कैथलिक देश है, मुझे ज़्यादा समय नहीं लगा यह जानने में कि बहुत से लोगों का, अपने धर्म का पालन करने के साथ साथ, अभी भी 'अंधकार वाले पहलू' से सम्पर्क है। लोगों के लिए किसी जादू-टोने वाले, ज्योतिषी, नीम-हकीम से सम्पर्क करना सामान्य बात थी, बिना यह समझे कि वास्तव में वे जादू-टोने से सम्पर्क कर रहे हैं।

मुझे याद है एक बार मेरी पत्नी मुझे एक युवा महिला से मिलाने ले गई जिसे ऐसे ही किसी 'तांत्रिक' के पास ले जाया गया था, और वह उसके तुरंत बाद मानसिक रुप से त्रस्त लोगों के अस्पताल पहुंच गई थी। जैसे मुझे समझ आया कि वह मसीही है, मैंने उसके अंदर प्रवेश की हुई दुष्टात्माओं को निकल जाने की आज्ञा दी, यीशु मसीह के नाम में। एक कैथलिक पादरी ने भी प्रार्थना की, और हम दोनों की प्रार्थना से वह लड़की आज़ाद हो गई और बहुत जल्द उस संस्था से उसे छुट्टी भी मिल गई।

अन्य लोग कैथलिक होने का दावा करते थे और फिर भी खुलेआम अन्य देवताओं की मूर्तियों और वस्तुओं का प्रदर्शन करते थे। मैं ऐसे ही एक आदमी से मिला जिसे लगातार पेट में तकलीफ रहती थी। एक दिन मैंने उससे कहा कि यदि वह उस मोटे बुद्ध को, जो उसके घर के सामने था, हटा दे – रात के समय वह रोशन हो जाता था – तो उसके पेट की तकलीफें खत्म हो जाएंगी। इसके अलावा, उसके द्वारा इकट्ठा की कुछ अन्य वस्तुओं को भी निकलना होगा। उसने विरोध किया – ये 'मरी' हुए वस्तुए उसे किस तरह बीमार कर सकती हैं? कुछ महीनों बाद मेरी दोबारा उससे मुलाकात हुई और मैंने पूछा कि अब उसका पेट कैसा था। कुछ शर्मिंदगी के साथ उसने जवाब दिया, 'आखिरकार मैंने तुम्हारी सलाह मान ली और उस बुद्ध से छुटकारा पा लिया। मेरा पेट अब ठीक है।'

एक अन्य अवसर पर, मुझे एक ऐसी महिला से मिलने के लिए कहा गया था जिसे कैंसर था। मेरे प्रार्थना शुरु करने से पहले ही मैंने उन्हें उनकी बैठक में रखे बुद्ध को हटाने की सलाह दी, जिसे उसके पति ने तुरंत मान लिया। जैसे मैंने उसके ऊपर से श्रापों को तोड़ा और यीशु के नाम में दुष्टात्माओं को निकल जाने की आज्ञा दी, उसने बताया कि एक शीत ठंडा ऐहसास उसके पैरों से ऊपर चढ़ते हुए उसके सिर में से बाहर निकल रहा है।

तो, इस पृष्ठभूमि, के समक्ष मैंने उस प्रार्थना समूह को 'श्रापों'

के विषय पर शिक्षा देने का फैसला लिया, जिसे मैंने और मेरी पत्नी ने उस नोमिया के घर में शुरु किया था। वह शिक्षा डेरेक प्रिन्स के कार्य पर आधारित थी (डेरेक प्रिन्स बीसवी सदी के एक जानेमाने बाइबल शिक्षक थे)। जब मैं अपने संदेश फ्रेंच में तैयार कर रहा था, मैंने सीखा कि श्राप देने के लिए उनका जो शब्द था वह था मेलेडिक्शन, और आशीष के लिए उनका शब्द था बेनेडिक्शन। इन शब्दों का मूल अर्थ है 'बुरा बोलना' और 'अच्छा बोलना'।

पहले, जब मैं आशीष और श्राप की तुलना करता था, तो श्राप देना अंधकारमय, भारी और खतरनाक प्रतीत होता था, और आशीष देना काफी हलका और सौम्य लगता था। मैंने पहले श्राप पर तो शिक्षा सुनी थी, लेकिन आशीष पर नही – शायद इसी बात से मेरी धारणा बन गई थी। इसके अलावा मैंने कभी किसी को वास्तविक उद्देश्य और प्रभाव के साथ आशीष देते नहीं सुना था। वास्तव में, एक मसीही आशीष की हद्द केवल किसी के छींकने पर 'ब्लेस यू' कहने या पत्र या ईमेल के अंत में 'आशीष सहित' लिखने तक ही सीमित हो सकती है – जैसे कि लगभग यह कोई आदत वाली बात है नाकि सोच समझकर की जाने वाली बात।

बाद में, जैसे मैंने इन शब्दों पर सोचा, 'मेलेडिक्शन' और 'बेनेडिक्शन', तो मुझे ऐहसास हुआ कि यदि 'बुरा बोलना' सामर्थशाली है, तो 'अच्छा बोलना' कम से कम उतना ही

सामर्थशाली और, परमेश्वर के साथ, शायद उससे भी अधिक सामर्थशाली होना चाहिए!

इस प्रकाशन, और इसीके साथ अन्य अन्तरदृष्टि, जिनके बारे में आगे बात करेंगे, ने मुझे आशीष की सामर्थ की खोज करने के सफर पर डाल दिया।

हमारे बोलने की सामर्थ

उन सारी बातों को दोहराए बिना, जो कई अच्छी पुस्तकें शब्दों के सामर्थ के बारे में कह चुकी है, मैं उसका सार देना चाहता हूं जो मुझे लगता है इस क्षेत्र में ज़रुरी है।

हम जानते हैं कि:

> जीभ के वश में मृत्यु और जीवन दोनों होते हैं, और जो उसे काम में लाना जानता है वह उसका फल भोगेगा। (18:21)

शब्दों में भयंकर सामर्थ होती है – या तो सकारात्मक और रचनात्मक, या फिर नकारात्मक और विनाशकारी। हर बार जब हम शब्द बोलते हैं (और एक अमुक लहज़े का इस्तेमाल भी करते है, जो शब्दों मे अतिरिक्त अर्थ डाल देता है), हम या तो जीवन बोलते हैं या मृत्यु, उनके प्रति जो हमें सुनते हैं और अपने आप को भी। इसके अलावा हम यह भी जानते हैं कि:

> जो मन में भरा है, वही मुंह पर आता है। भला मनुष्य

> मन के भले भंडार से भली बातें निकालता है, और बुरा मनुष्य बुरे भंडार से बुरी बातें निकालता है। (मत्ती 12:34,35)

तो एक आलोचनात्मक हृदय से एक आलोनात्मक जीभ बोलती है; एक आत्म-धर्मी हृदय से एक न्याय करने वाली जीभ; एक आभारहीन हृदय से एक शिकायत वाली जीभ; और इसी तरह। उसी प्रकार वासनामय हृदय उसी के अनुरुप फल भी लाएगा। दुनिया नकारात्मक बोलने से भरी हुई है। मीडिया दिन प्रतिदिन इसे उगलता है। जैसे कि मानवी स्वभाव है, हम लोगों और स्थितियों के बारे में अच्छा नहीं बोलना चाहते। यह हमारे लिए स्वाभाविक नहीं है। अक्सर हम लोगों के बारे में कुछ अच्छा कहने के लिए उनके मरने तक इंतज़ार करते हैं। परन्तु, जो 'अच्छा खज़ाना' है उस प्रेमपूर्ण हृदय से उमड़ता है जो एक अनुग्रहकारी जीभ द्वारा बोलता है; एक शांतिपूर्ण हृदय एक मेलमिलाप कराने वाली जीभ द्वारा; और इसी प्रकार से।

वह कथन, '...और जो उसे काम में लाना जानता है वह उसका फल भोगेगा' यह सुझाता है कि हम वही काटते हैं जो हम बोते हैं – चाहे वह अच्छा है या बुरा। दूसरे शब्दों में, आप को वही मिलेगा जो आप बोलते हैं। आप इसके बारे में क्या सोचते हैं?

यह सभी मनुष्यों के लिए सच है, चाहे उनका मसीही विश्वास है या नहीं।

परन्तु, एक नया जन्म पाए मसीही के पास एक नया हृदय होता है। बाइबल समझाती है कि हम 'नई सृष्टि' हैं (2 कुरिन्थियों 5:17)। इसीलिए, मसीही होने के नाते, हमें अधिक अच्छा बोर्लना चाहिए और कम बुरा। हम आसानी से नकारात्मकता में गिर सकते हैं यदि हम अपने हृदय और शब्दों के प्रति सचेत रहने की सावधानी ना बरतें तो। जब आप जानबूझ कर इसके बारे में सोचने लगते हैं, तो आप हैरान होंगे कितनी बार मसीही लोग – बिना सोचे समझे – अपने आपको और दूसरों को श्राप दे देते हैं। इस विषय पर बाद में अधिक ध्यान देंगे।

अच्छा बोलने से आशीष देने की ओर बढ़नाः हमारी बुलाहट

एक मसीही होने के नाते, प्रभु यीशु का जीवन हमारे द्वारा बहने से, हम केवल अच्छा बोलने से आगे बढ़ सकते हैं – हम बोल कर लोगों और स्थितियों में आशीष बहाल कर सकते हैं – और हम इसी के लिए तो बुलाए गए हैं। शायद आशीष देना हमारी महान बुलाहट है। निम्नलिखित पढ़ें:

> करुणामय और नम्र बनो। बुराई के बदले बुराई मत करो और न गाली के बदले गाली दो; पर इसके विपरति आशीष ही दो, क्योंकि तुम आशीष के वारिस होने के लिए बुलाए गए हो। (1 पतरस 3:8,9)

हमें आशीष देने और पाने के लिए बुलाया गया है।

जो पहले शब्द परमेश्वर ने आदम और हव्वा से कहे वे आशीष थे:

> और परमेश्वर ने उनको आशीष दी, और उनसे कहा,

> फूलो–फलो ओर पृथ्वी में भर जाओ, और उसको अपने वश में कर लो... (उत्पत्ति 1:28)

परमेश्वर ने आशीषित किया ताकि वे फूल–फल सकें। आशीष देना परमेश्वर का एक गुण है – वह यही करता है! और परर्म ेश्वर की तरह – और परमेश्वर की ओर से – हमें भी अधिकार और सामर्थ मिले हैं दूसरों को आशीष देने के लिए।

यीशु ने आशीष दी। जो अंतिम काम उसने किया, स्वर्ग में उ ठाए जाने से पहले, वह था उसके शिष्यों को आशीष देनाः

> तब वह उन्हें बैतनिय्याह तक बाहर ले गया, और अपने हाथ उठाकर उन्हें आशीष दी; और उन्हें आशीष देते हुए वह उनसे अलग हो गया और स्वर्ग पर उठा लिया गया। (लूका 24:50,51)

यीशु हमारा आदर्श है। उसने कहा कि हमें भी वह सब करना चाहिए जो उसने किया, उसके नाम में। हमें परमेश्वर द्वारा आशीष देने के लिए बनाया गया है।

मसीही आशीष क्या है?

पुराने नियम में, 'आशीष' शब्द के लिए इब्रानी शब्द है बराक। इसका साधारण अर्थ है, 'परमेश्वर के उद्देश्य को बोलना।'

नए नियम में, 'आशीष' के लिए यूनानी शब्द है यूलोजिया, जिसमें से हमें 'यूलोजी' शब्द मिलता है। तो, प्रयोगात्मक रुप से, इसका अर्थ होता है 'किसी के बारे में अच्छा बोलना' या किसी व्यक्ति पर 'परमेश्वर के उद्देश्य और प्रसन्नता बोलना'।

आशीष की इसी परिभाषा का प्रयोग मैं इस पुस्तक में करुंगा। आशीष, किसी व्यक्ति पर या स्थिति पर परमेश्वर के उद्दश्य या प्रसन्नता को बोलना है।

परमेश्वर ने, ज़्यादातर अपने ज्ञान में, पृथ्वी पर अपने कार्य को सीमित करने का निश्चय किया है ताकि वो वह अपने लोगों के द्वारा पूरा कर सके। इसी प्रकार से वह अपना राज्य पृथ्वी पर लाता है। इसी प्रकार, वह चाहता है कि हम उसकी ओर से आशीष दें। तो, एक मसीही होने के नाते, मैं परमेश्वर के उद्दश्यों या प्रसन्नता को किसी व्यक्ति पर या किसी स्थिति पर

बोल सकता हूं , यीशु के नाम में। यदि मैं ऐसा प्रेम और विश्वास से करता हूं, तो जो मैं बोलता हूं उसके पीछे स्वर्ग की सामर्थ होती है और मैं अपेक्षा कर सकता हूं कि परमेश्वर उन स्थितियों को उनके वर्तमान स्थान से बदल कर, वहां ले आएगा जहां वह चाहता है। जब मैं किसी को जानते बूझते हुए, प्रेम और विश्वास के साथ, आशीष देता हूं तो मैं परमेश्वर को उस व्यक्ति के जीं वन में अपनी योजनाएं कार्यरत करने के लिए सक्षम करता हूं।

इसके विपरित, कोई जाने या अनजाने में, किसी पर या अपने आप पर भी शैतान के उद्देश्य बोल सकता है, जिससे फिर शैतानी शक्तियां उस व्यक्ति के जीवन में अपनी योजनाएं कार्य रत करने में सक्षम हो जाती हैं – जो कि है, नष्ट करना, चोरी करना और हत्या करना। परन्तु परमेश्वर की स्तुति हो,

> 'जो तुम में है वह उससे जो संसार में है, बड़ा है' (1 यूहन्ना 4:4)

परमेंश्वर का हृदय ही आशीष देना है – वास्तव में यह उसका स्वभाव है! आशीष देने की परमेश्वर की अभिलाषा चौंका देने की हद्द तक उदार है। कुछ भी उसे रोक नहीं सकता। मानर्व जाती को आशीष देने के लिए वह दृढ़ संकलपित है। उसकी तिव्र इच्छा है कि यीशु के बहुत सारे भाई और बहन हों। और वे हम हैं! हालांकि परमेश्वर का हृदय सारी मानवजाती को

आशीषित करने का है, वह उससे भी अधिक यह चाहता है कि उसके लोग एक दूसरे को आशीष देंगे।

जब हम यीशु के नाम में आशीष देते हैं, तो पवित्र आत्मा आता है क्योंकि हम कुछ ऐसा प्रकट कर रहे हैं जो पिता कर रहा है – हम ऐसे शब्द बोल रहे हैं जो पिता चाहता है कि बोले जाएं। मैं लगातार इस बात से हैरान होता हूं कि यह कितना सच है। जब मैं किसी को आशीष देता हूं, तब पवित्र आत्मा भी उसमें शामिल होता है – वह उस दूसरे व्यक्ति को स्पर्ष करता है, प्रेम उमड़ता है और स्थितियां बदलती हैं। अक्सर लोग बाद में मुझसे गले लग कर कहते हैं, 'आप नहीं जानते इसका समय कितना सही और यह कितना सामर्थशाली था', या 'आपको नहीं पता मुझे इसकी कितनी ज़रुरत थी'।

लेकिन यह बात ध्यान देने वाली हैः हम आशीष देते हैं परमेश्वर के साथ घनिष्टता के स्थान से, उसकी उपस्थिति में से। परमेई वर के साथ हमारी निकटता अति आवश्यक है। हमारे शब्द उ सके शब्द हैं और वे उसकी सामर्थ से अभिषित्त किए जाते है, उस व्यक्ति या स्थिति के लिए, उसके उद्देश्यों को पूरा करने के लिए। लेकिन आइए थोड़ा पीछे की ओर जाएं...

हमारा आत्मिक अधिकार

पुराने नियम में, याजकों को लोगों के लिए निवेदन करना होता था और उनके ऊपर आशीषों की घोषणा करनी होती थी।

तुम इस प्रकार से इस्राएल की संतानों को आशीष दोगे। उनसे कहो:

> यहोवा तुझे आशीष दे और तेरी रक्षा करे,
> यहोवा तुझ पर अपने मुख का प्रकाश चमकाए,
> और तुझ पर अनुग्रह करे।
> यहोवा अपना मुख तेरी ओर करे,
> और तुझे शांति दे
>
> इस रीति से वे मेरे नाम को इस्राएलियों पर रखें,
> और मैं उन्हें आशीष दिया करुंगा। (गिन्ती 6:23–27)

नए नियम में, हम मसीहियों को बुलाया गया है:

> ... एक चुना हुआ वंश, और राज –पदधारी याजकों

> का समाज, और पवित्र लोग, और (परमेश्वर की) निज प्रजा हो, इसलिए कि जिसने तुम्हें अन्धकार में से अपनी अद्‌भुत ज्योति में बुलाया है, उसके गुण प्रगट करो। (1 पतरस 2:9)

और यीशु ने

> ... हमें एक राज्य और अपने पिता परमेश्वर के लिए याजक भी बना दिया... (प्रकाशितवाक्य 1:6)

कुछ समय पहले, मै वेन टोरो पर बैठा था, जो कि नोमिया में एक नज़ारा देखने की जगह है, और एक प्रार्थना समूह के लिए संदेश लाने की तैयारी कर रहा था। मुझे ऐहसास हुआ परमेश्वर कह रहा है, 'तुम नहीं जानते तुम कौन हो।' फिर कुछ महीनों बादः 'यदि केवल तुम यह जानते कि मसीह यीशु में तुम्हारे पास क्या अधिकार है तो तुम दुनिया बदल सकते।' ये दोनो संदेश खास समूह के लोगों के लिए थे लेकिन, मुझे ऐहसास हुआ, वे मेरे लिए भी थे।

मुझे लगता है, सामान्य रुप से मसीही मंडलियों में यह बात मानी जाती है कि किसी बीमारी या स्थिति (एक 'पहाड़' – मरकुस 11:23) से सीधे तौर पर बात करना और चंगाई का आदेश देना ज़्यादा असरदार होता है बजाय परमेश्वर को ऐसा करने के

लिए कहने से (मत्ती 10:8; मरकुस 16:17–18)। यह निश्चित रुप से मेरा अपना अनुभव रहा है और अन्य जाने–माने और आदरणीय लोगों का जो चंगाई और छुटकारे की सेविकाई में सफल रहे हैं। मैं विश्वास करता हूं वास्तव में यीशु यह कहता है, 'तुम बीमारों को चंगा करो (मेरे नाम में)। यह मेरा काम नहीं है, यह तुम्हारा काम है। इसे तुम करो।'

परमेश्वर चंगाई देना चाहता है और वह उसे हमारे द्वारा देना चाहता है। परमेश्वर छुटकारा देना चाहता है और वह उसे हमारे द्वारा देना चाहता है। परमेश्वर आशीष देना चाहता है और वह उसे हमारे द्वारा देना चाहता है। हम परमेश्वर को आशीष देने के लिए मांग सकते हैं, या फिर हम खुद आशीष दे सकते है यीशु के नाम में।

कुछ साल पहले, मुझे याद है कि मैं समय निकाल कर काम पर जल्दी पहुंचा था ताकि अपने व्यवसाय को आशीषित करुं। मैंने शुरुआत की यह कहते हुए, 'परमेश्वर, कोलमार ब्रंटन को आशीष दे।' मुझे बेअसर लगा। फिर मैंने उसे बदला – पहले थोड़ा हिचकिचाते हुए – 'परमेश्वर कोलमार ब्रंटन को आशीष दे' से:

> कोलमार ब्रंटन, मैं तुम्हें आशीष देता हूं पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम में। मैं तुम्हें ऑक्लैंड में आशीष

> देता हूं, और मैं तुम्हें वेलिंगटन में आशीष देता हूं, और मैं तुम्हें सारे क्षेत्रों में आशीष देता हूं। मैं तुम्हें काम पर आशीष देता हूं और मैं तुम्हें घर पर आशीष देता हूं। मैं इस स्थान में परमेश्वर के राज्य को फैलाता हूं। आ पवित्र आत्मा, तेरा यहां स्वागत है। मैं प्रेम और शांति और धीरज और दयालुता और नेकी और विर्श वास और नम्रता और आत्म–संयम को मुक्त करता हूं। यीशु के नाम में, मैं परमेश्वर के राज्य से ऐसे विचारों को मुक्त करता हूं जो हमारे ग्राहको को सफल होने में मददगार होंगे और दुनिया को एक बेहतर जगह बनाएंगे। मैं ग्राहक बाज़ार में प्रसन्नता को मुक्त करता हूं। मैं रोज़गार और व्यवसाय के स्थानों में प्रसन्नता को मुक्त करता हूं। मैं हमारे दर्शन को आशीषित करता हूं: ‘बेहतर व्यवसाय, बेहतर दुनिया’। यीशु के नाम में, आमीन।

जैसे मेरी अगुवाई हुई, मैं हमारे प्रवेश द्वार पर क्रूस का निशान बनाता और आत्मिक तौर पर अपने व्यवसाय पर यीशु के लहू की सुरक्षितता को लागू करता।

उस क्षण से जब मैंने ‘परमेश्वर कोलमन ब्रंटन को आशीष दे’ से ‘मैं कोलमन ब्रंटन को पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम में आशीषित करता हूं’ मे बदलाव किया, परमेश्वर का अभिषेक मुझपर उतर आया – मुझे परमेश्वर के प्रसन्नता और समर्थन

का ऐहसास हुआ। मानो जैसे वह कह रहा हो, 'तुझे समझ में आ गया बेटे; मैं यही चाहता हूं कि तू करे।' हालांकि मैं इसे अब तक सैंकड़ों बार कर चुका हूं, मैंने हमेशा इसमें परमेश्वर की प्रसन्नता का ऐहसास किया है। और इसका नतीजा? दफ्तर का वातावरण बदल गया, और बहुत तेज़ी से बदला, इस हद्द तक की लोग इसके बारे में खुलकर बातें करने लगे, ओर सोचने लगे कि सबकुछ इतना कैसे बदल गया। यह सच में अद्भुत था! आशीष सच में दुनिया को बदल सकती है।

परन्तु मैं वही पर नहीं रुका। सुबह, जब दफ्तर खाली ही होता, मै किसी ऐसे व्यक्ति की कुर्सी के पास जाता जिसे किसी स्थिति में ज्ञान की ज़रुरत होती, और उस कुर्सी पर हाथ रखकर उन्हें आशीषित करता, यह विश्वास करते हुए कि काम पूरा करने के लिए अभिषेक उस कुर्सी में उतरेगा और फिर उसपर बैठने वाले व्यक्ति में पहुंचेगा (प्रेरितों 19:12)। जब भी मुझे लोगों की विषेश ज़रुरतों के बारे में पता चलता, तो मैं इसी प्रकार से उन्हें आशीषित करता।

विशेषकर मुझे एक व्यक्ति याद है जिसे इश्वर की निन्दा करने की आदत थी – मतलब की वह परमेश्वर के नाम में शपथ और प्रण लिया करता था। एक सुबह मैंने उसकी कुर्सी पर हाथ रखा, इश्वर–निन्दा की आत्मा को बांधा, यीशु के नाम में। इसको कई बार करना पड़ा, पर आखिरकार इसके पीछे जो आत्मा थी उसे अपने से बड़े सामर्थ के आगे घुटने टेकने पड़े

और उस आदमी के कामकाजी शब्दावली में से इश्वर–निन्दा गायब हो गई।

मुझे एक और व्यक्ति याद है जो मेरे पास प्रार्थना के लिए आया था, वह चाहता था कि परमेश्वर उसे उसके काम के स्थान से निकलवा दे क्योंकि वहां सभी लोग इश्वर–निन्दा करते थे। मैंने एक विपरित दृष्टिकोण लियाः यह व्यक्ति वहां इसलिए था कि अपने काम के स्थान को आशीषित कर सके और वातावरण को बदल सके! हम अपनी दुनिया को बदल सकते हैं।

मैंने यह दृष्टिकोण बना लिया है कि, हांलाकि परमेश्वर मनुष्य जाती को आशीषित करना चाहता है, उससे भी अधिक वह यह चाहता है कि हम – उसके लोग, उसके बच्चे – मनुष्य जाती को आशीषित करें। आपके पास आत्मिक अधिकार है। आप आशीष दो!

हमारा स्वर्गीय पिता चाहता है कि हम सहभागी बनें, उसके साथ सहकार्य करें उसके छुटकारा लाने के कार्य में। हम मानव जाती को चंगाई ओर छुटकारे से आशीषित कर सकते हैं लेकिन हम मानव जाती को अपने शब्दों से भी आशीष दे सकते हैं। कैसा सौभाग्य और ज़िम्मेदारी है!

तो, मेरे लिए, आशीष है परमेश्वर के उद्देश्यों को लोगों के जीं

वनों या स्थितियों मे बोलना, प्रेमपूर्वक, खुली आंखो के साथ, सोच समझ कर, अधिकार और सामर्थ के साथ, पवित्र आत्मा से भरी अपनी खुद की आत्मा से। तो साधारण शब्दों में, आशीष है विश्वास में कदम उठाते हुए किसी व्यक्ति या स्थिति में परमे ेश्वर के उद्देश्यों का ऐलान करना। जब हम परमेश्वर के उद्देश्य का ऐलान करते हैं, तो वर्तमान स्थिति को, जो वह चाहता है उ समें, बदलने के लिए उसकी योग्यता को मुक्त करते हैं।

और याद रखें – हम आशीषित हैं क्योंकि हम आशीष देते हैं।

आशीष देना निवेदन करने से भिन्न है

अधिकतर लोग यह पाते हैं कि आशीष देना सीखना काफी कठिन है। और हमेशा की तरह, वे 'निवेदन करने लग जाते है पिता से, उनको आशीष देने के लिए। हालांकि ऐसा करना अच्छी बात है, पर इस प्रकार से बोली हुई आशीष वास्तव में प्रार्थना होती है, और इन दोनों में का फर्क समझना ज़रुरी है। बोलना या आशीषों का ऐलान करना प्रार्थना और निवेदन की जगह नहीं ले लेता, परन्तु यह उनका साथी है – इन्हें नियमित तौर पर एक साथ पाया जाना चाहिए।

लेखकों रॉय गॉडविन और डेव रॉबर्ट्स ने अपनी पुस्तक "द ग्रेस आउटपोरिंग" में इसे अच्छी तरह समझाया हैः

> जब हम आशीष देते हैं तो हम उस व्यक्ति की आंखों में देखते है (यदि ऐसी स्थिति हो तो) ओर सीधे तौर पर उनसे बात करते हैं। उदाहरण के लिए, हम शायद कुछ ऐसा कहें, 'मैं तुम्हें प्रभु के नाम में आशीषित करता हूं, कि प्रभु यीशु का अनुग्रह तुम पर आकर ठहरे। मैं तुम्हें

यीशु के नाम में आशीष देता हूं कि पिता का प्रेम तुम्हें घेर ले और तुम्हें भर दे; ताकि तुम अपनी गहराइयों में जान सको कितने पूर्णता से और सम्पूर्ण रुप से वह तुम्हें स्विकार करता और तुममें आनंद मनाता है।’

व्यक्तिगत सर्वनाम ‘मैं’ पर ध्यान दें। वह मैं हूं जो यीशु के नाम में किसी व्यक्ति पर आशीष का ऐलान कर रहा हूं। मैंने आशीष के लिए परमेश्वर से प्रार्थना नहीं की है परन्तु आशीष बोली है यीशु के, लोगों पर आशीष का ऐलान करने के लिए, हमें दिए अधिकार से, ताकि वह आकर उन्हें आशीष दे सके।

भाग दो :

इसे कैसे करें

एक महत्वपूर्ण सिद्धांत

न्याय ना करें। इस बात का न्याय न करें कि कोई आशीष पाने के योग्य है या नहीं। सच्ची आशीष, किसी व्यक्ति या वस्तु पर बोली गई, दर्शाती है कि परमेश्वर उन्हें किस प्रकार देखता है। परमेश्वर का केंद्रबिंदु यह नहीं है वे इस समय कैसे दिखाई दे रहे हैं, परन्तु इस पर कि उन्हें कैसे होना चाहिए।

उदाहरण के लिए, परमेश्वर ने गिदोन को 'एक शूरवीर योद्धा' बुलाया (न्यायियों 6:12) जबकी, उस समय, वह ऐसा कुछ था ही नहीं! यीशु ने पतरस को 'चट्टान' बुलाया (मत्ती 16:18) इससे पहले कि उसके पास अन्य लोगों की उसपर निर्भरता उठाने के लिए 'कंधे' थे। आगे, हम पढ़ते है, 'परमेश्वर...मृत्कों को जीवन देता, और उन वस्तुओं को जो अस्तित्व में हैं भी नहीं, ऐसे बुलाता है जैसे वे हैं' (रोमियों 4:17)। यदि हम इसे समझ गए, तो यह 'न्याय' करने की हमारी प्रवृति को खत्म कर देगा कि कोई आशीष पाने के योग्य है या नहीं।

लोग जितने आशीष के योग्य नहीं है, उन्हें उतनी ही उसकी ज़रुरत है। जो लोग अयोग्य लोगों को आशीषित करते हैं वें खुद सबसे बड़ी आशीष पाते हैं।

मैं आशीष का विद्यार्थी हूं। जब मैंने शुरुआत की तो मुझे पता नहीं था कि आशीषित कैसे करना है और मेरी मदद के लिए कुछ था भी नहीं। मैंने काफी जल्द यह ऐहसास करना शुरु कर दिया कि कई विभिन्न प्रकार की स्थितियां है, तो मैं आपको नीचे सुझाव दे रहा हूं। आप उन्हे अपनी स्थिति के लिए अपना सकते हैं, जो पवित्र आत्मा आपसे कहना चाहता है उसके अनुसार। इसमें अभ्यास की ज़रुरत होगी, लेकिन यह फार्ए ादेमंद रहेगा।

विभिन्न स्थितियां जिनका हम सामना कर सकते है

उनको आशीष देना जो आपको गाली या श्राप देते हैं

कई साल पहले, एक कर्मचारी, जिसने हाल ही में इस्तीफ़ा दिया था, मेरे घर कॉफी पीने और अलविदा कहने आई। उसका विश्वास "न्यू एज" की तर्ज पर था – 'अंदर की अच्छाई', जैसी बातें। बातचीत के दौरान, उसने कहा कि पिछली दो कम्पनीयां, जिनमें उसने काम करके फिर छोड़ दिया था, बाद में कंगाल हो गई थी। उस समय मैं बहुत पुराना मसीही नहीं था, फिर भी मैं यह पहचान गया कि उसके शब्द एक श्राप की तरह प्रज्वलित होना चाहते थे। मुझे कुछ पलों के लिए डर लगा और फिर, मेरे मन में, मैंने उन्हें स्विकार करने से इन्कार कर दिया। लेकिन मैंने उसे आशीषित करने का अतिरिक्त कदम नहीं उठाया। मेरे मन में जो था, वह प्रार्थना करने के लिए उसकी अनुमति लेने के बाद, मैं शायद कुछ इस तरह कह सकता था:

> डेबराह (उसका वास्तविक नाम नहीं है), मैं तुम्हारे जीवन में जादू-टोने के असर को बांधता हूं। मैं यीशु के नाम में तुम्हें आशीषित करता हूं। मैं तुम्हारे ऊपर

> परमेश्वर की भलाई का ऐलान करता हूं। तुम्हारे जीं वन में परमेश्वर के उद्देश्य पूरे हों... मै तुम्हारी प्रतिभा को आशीषित करता हूं, वे तुम्हारे भावी मालिक को आशीषित करें और परमेश्वर को महिमा लाएं। तुम परमेश्वर की एक अद्भुत स्त्री बन सको जैसा उसका उद्देश्य है। यीशु के नाम में, आमीन।

जैसा कि मैं जिक्र कर चुका हूं, मैं विश्वास करता हूं कि जिस तरह हम आशीष देते है वह महत्वपूर्ण है। उदाहरण के लिए, ऐसा कहना टालें, 'परमेश्वर फ्रेड को आशीष दे, प्रभु। उसकी शराब छुड़ा दे और, प्रभु, उसे मेरी बात मानना सिखा।' मेरे दृष्टिकोण से, यह कहना कहीं अधिक बेहतर होगा,

> फ्रेड, मैं तुम्हें यीशु के नाम में आशीषित करता हूं। तुर्म्हारे जीवन में परमेश्वर की योजनाएं पूरी हों। तुम वह पुरुष, वह पति और वह पिता बन सको जो परमेश्वर तुमसे चाहता है। मैं तुम्हें आशीष देता हूं कि तुम नशे की लत्त से आज़ाद हो जाओ; मैं तुम्हें यीशु की शांति से आशीषित करता हूं...

इस उदाहरण के आधार पर, मैं तीन मुद्दे देना चाहुंगाः

- पहला तरीका समस्या को पूरी तरह परमेश्वर पर डाल देता है। इसके अलावा, यह गिड़गिड़ाने वाला, न्याय करने

वाला, आत्म–धर्मी और वर्तमान की स्थिति पर केंद्रित होता है।

- दूसरे तरीके में अधिक सहभागिता शामिल होती है। यह न्याय करने वाला नहीं है और यह फ्रेड की परमेश्वर द्वारा दी हुई क्षमता पर ज़ोर देता है।
- दूसरा तरीका परमेश्वर, जो फ्रेड से बेहद प्रेम करता है, के छुड़ाने के उद्देश्य को दिखाता है।

उन्हें आशीष देना जो आपको भड़काते हैं

कुछ बातें जो हमें गुस्सा दिलाती हैं वे हैं जब लोग ट्रैफिक में स्वार्थ भरा, असंवेदनशील या खुलेआम ठगी का बर्ताव करते हैं। यह हर समय होता है। एकाएक हमारे दिमाग में कई गैर–मसीही शब्द आ जाते हैं और मूंह से निकल भी जाते है। जब ऐसा हाता है, तो हम किसी को श्राप दे रहे होते है जो परमेश्वर के स्वरुप में बना है और जिससे परमेश्वर प्रेम करता है। परमेश्वर अच्छी तरह ऐसे व्यक्ति का बचाव कर सकता है।

जब अगली बार ऐसा हो, तो दूसरे वाहन चालक को आशीष देने का प्रयत्न करें, बजाय गुस्से से भरे शब्द बोलने केः

> मैं उस नवयुवक को आशीषित करता हूं जिसने मुझे पछाड़ा है (कतार में धोखा करना)। मैं उसके ऊपर तेरे प्रेम का ऐलान करता हूं प्रभु। मैं उसके ऊपर तेरी

> भलाई को मुक्त करता हूं और उसके जीवन के लिए तेरे उद्देश्यों को। मैं इस नवयुवक को आशीष देता हूं और इसकी क्षमता को आगे बुलाता हूं। ये सुरक्षित अपने घर पहुंचे और अपने परिवार के लिए आशीष बने। यीशु के नाम में, आमीन।

या साधारण तरह सेः

> मैं उसके जीवन के लिए तेरी योजनाओं को कार्यरत और मुक्त करता हूं, प्रभु। यह वह व्यक्ति बने जो इसे बनाने का उद्देश्य तूने रखा है।

मेरा जॉन नाम का एक दोस्त हुआ करता था जिसने मुझे उसके परिवार के लिए प्रार्थना करने के लिए बुलाया, जो विरासत की संपत्ति के झगड़े से जूझ रहे थे। झगड़ा खिंचता जा रहा था और अधिक दुखदायी होता जा रहा था। मैंने सुझाव दिया कि प्रार्थना करने के बजाय, हम इस स्थिति को आशीषित करें।

> हम इस विरासत की संपत्ति के झगड़े को यीशु के नाम में आशीषित करते हैं। हम फूट, विवाद, कलह का विरोध करते हैं और हम न्याय और निष्पक्षता और मेल –मिलाप को मुक्त करते हैं। जैसे हम इस स्थिति को आशीषित करते हैं, हम अपने आप के विचारों और अभिलाषाओं को परे करते हैं और हम परमेश्वर को

अनुमति देते हैं कि वह इस संपत्ति के बंटवारे में अपने उद्देश्यों को पूरा करे। यीशु के नाम में, आमीन।

एक –दो दिनों में ही यह मामला शांतिपूर्वक सुलझ गया। आशीष सच में दुनिया बदल सकती है।

अपने आपको आशीष देना, बजाय श्राप देने के

श्रापों को पहचानना और तोड़ना

ये विचार कितने आम हैं: 'मैं बदसूरत हूं, मैं बेवकूफ हूं, मैं अनाड़ी हूं, मैं मंदबुद्धि हूं, कोई मुझे पसंद नहीं करता, परमेश्वर कभी मेरा इस्तेमाल नहीं कर सकेगा, मैं एक पापी हूं ...? कितने सारे झूठ हैं जिनपर शैतान हमसे विश्वास करवाता है। मेरी एक मित्र यह अक्सर करती रहती है, और इससे मुझे दुख होता है। 'ओह, तू मूर्ख लड़की रोज़ (उसका वास्तविक नाम नहीं है)। तूने फिर गड़बड़ कर दी। तू कुछ भी ठीक से नही कर सकती।'

इस श्रापों को ना दोहराएं नाही स्विकार करें! इसके बजाय अपने आपको आशीषित करें।

मुझे एक विशेष प्रार्थना समूह की स्थिति याद है। मैंने एक महिला, पर नाकाबिलीयत की आत्मा को परखा, जो प्रार्थना करवाने आई थी। प्रार्थना के दौरान उसने कहा, 'मैं बेवकूफ हूं।' मैंने उससे पूछा कि उसने यह कहा से सुना। उसने मुझे बताया कि उसके माता –पिता ने यह उसपर कहा था। कितना दुखद है ... और कितना सामान्य भी।

मैंने इन पंक्तियों के सहारे उसका मार्गदर्शन किया:

> यीशु के नाम में, मैं अपने माता –पिता को क्षमा करती हूं। मैं अपने आपको क्षमा करती हूं। मैं उन शब्दों को तोड़ती हूं जो मेरे माता –पिता ने और मैंने खुद मुझपर कहे हैं। मेरे पास मसीह का मन है। मैं होशियार हूं।

सारांश में, हमने तिरस्कार और नाकाबिलीयत की आत्मा को बर्खास्त किया, और फिर मैंने उसे आशीषित किया और उसपर यह ऐलान किया कि वह परमेश्वर की राजकुमारी है, और वह उसके लिए मूल्यवान है, और परमेश्वर उसका इस्तेमाल दूसरों को आशीष देने, भावनात्मक चंगाई और आशा लाने के लिए करेगा। मैंने खुलकर उसे आशीषित किया।

धीरे धीरी उसने इस आशीष को सोख लिया। वह चमकने लग गई। अगले सप्ताह उसने बताया कि इससे उसे कितना लाभ हुआ है। हम सच में दुनिया बदल सकते हैं।

यह कोई भी कर सकता है। बाइबल लोगों के लिए परमेश्वर के उद्देश्यों से भरी हुई है और हम इन उद्देश्यों का ऐलान उनपर कर सकते हैं।

मैं एक और उदाहरण बांटना चाहुंगा। हाल ही में मैंने एक महिला के लिए प्रार्थना की थी जिसके पेट में दर्द था। जैसे मैंने

प्रार्थना की, पवित्र आत्मा उसपर उतरा और वह पूरी तरह नीचे झुक गई जैसे दुष्टात्माएं उसमें से निकल रही थीं। कुछ दिनों तक सबकुछ ठीक रहा और फिर वह दर्द लौट आया। 'क्यों, प्रभु?' उसने पूछा। उसने ऐहसास किया कि पवित्र आत्मा उ से याद दिला रहा है कि कुछ समय पहले, जब वह एक कॅम्प में थी, किसी ने उससे कहा था कि मुर्गी के मास को ठीक से पकाए नहीं तो लोग बीमार पड़ जाएंगे। उसने जवाब दिया था कि उसे अगले कुछ दिनों तक बीमार नहीं होना था (सम्मेलन के दौरान), लेकिन उसके बाद कुछ फर्क नहीं पड़ेगा। उसे उ न नासमझी से बोले गए शब्दों को तोड़ना पड़ा, और फिर उसने तुरंत अपनी चंगाई को दोबारा पा लिया।

किसी के मुंह को आशीषित करना

> मैं अपने मुंह को आशीषित करता हूं कि वह अनमोल को कहे और नाकि निकम्मे को, और प्रभु के मुख के सम्मान हो। (यिर्मयाह 15:19 पर आधारित)

यीशु के कई चमत्कार केवल बोलने के कारण घटे। उदाहरण के लिए, 'जा, तेरा पुत्र जीवित है।' (यूहन्ना 4:50)। मुझे यह चाहिए। इसीलिए मैं अपने मुंह को आशीषित करता हूं और उ समें से निकलने वाले शब्दों पर सतर्कता बरतता हूं।

एक बार मेरी पत्नी और मैं नोमिया के एक होटल में रह रहे थे। हम पूरी रात एक बच्चे को लगातार रोते हुए सुन रहे थे। करीब दो रातों तक ऐसा होन के बाद, मेरी पत्नी ने बगल वाले डेक पर जाकर उस मां से पुछा कि क्या समस्या है। उस महिला को पता नहीं था लेकिन उसने कहा डॉक्टर ने बच्चे को एंटिबार्यो टिक दवाइयों की तीसरी खेप शुरु कर दी है परन्तु कुछ भी काम नहीं कर रहा। मेरी पत्नी ने पूछा कि क्या हम उस बच्चे के लिए प्रार्थना कर सकते हैं और वह तैयार तो हो गई, परन्तु हिचकिचाते हुए। तो मैंनें अपनी औसत फ्रेंच में, उस बच्चे के लिए प्रार्थना की और विश्वास में उस बच्चे पर बोल कहे, कि वह 'एक बच्चे के समान सो सके'। और ऐसा ही हुआ।

किसी के दिमाग को आशीषित करना

मैं बार बार कहता हूं,

> मैं अपने दिमाग को आशीषित करता हूं; मेरे पास मसीह का मन है। इसलिए मैं उसके विचारों को सोचता हूं। मेरा दिमाग वह पवित्र स्थान बने जहां पवित्र आत्मा खुशी से रहना चाहे। उसे ज्ञान और बुद्धि के वचन और प्रकाशन मिले।

समय समय पर, मैं अपने विचारों की शुद्धता से संधर्ष करता हूं, और तब मैं इसे फायदेमंद पाता हूं। मैं अपनी कल्पना को

भी आशीषित करता हूं, कि वह भलाई के लिए इस्तेमाल की जाए नाकि बुराई के लिए। एक दिन मुझे अपनी कल्पनाओं में मुश्किल हो रही थी – वह ऐसी विभिन्न जगहों में भटक रही थी जहां मैं जाना नहीं चाहता था – और परमेश्वर ने मुझे उकसाया, 'अपनी कल्पनाओं में यीशु को चमत्कार करते हुए देख ...फिर अपने आपको उन्हें करते हुए देख।' मैंने कुछ अच्छा सोचना अधिक प्रभावशाली पाया है (फिलिप्पियों 4:8) बजाय किसी बात के बारे में ना सोचने से! और अपने खुद के दिमाग और कल्पना को आशीषित करने से पवित्रता के लक्ष्य को पाने में बहुत मदद मिलती है।

अपने शरीरों को आशीषित करना

क्या आप उस वचन से परिचित है, 'मन का आनंद अच्छी औषधि है' (नीतिवचन 17:22)? बाइबल कह रही है कि हमारे शरीर सकारात्मक शब्दों और विचारों के प्रति प्रतिक्रिया करते हैं:

> मैं अपने शरीर को आशीषित करता हूं। आज मैं अपने ऊपर से कमज़ारी को तोड़ता हूं। मैं अपनी शारीरिक सलामती को आशीषित करता हूं।

मैंने एक बार एक ऐसे आदमी का विडियो देखा जिसे दिल की गंभीर समस्या थी। उसका बाईपास (हृदय) अवरुद्ध हो चुका

था। उसने तीन महीनों तक अपनी धमनियों को आशीषित किया, ये ऐलान करते हुए कि वे अद्‌भुत और भयानक रीति से बनाई गई हैं। जब वह डॉक्टर के पास लौटा, तो यह पाया गया कि एक चमत्कारी ढंग से उसका नया बाईपास हो गया है!

मैने सोचा कि मैं इसे अपनी त्वचा के लिए इस्तेमाल करुंगा। मुझे मेरे युवा समय से सूर्य–किरणों से हानी की समस्या थी। अब मेरे बुढापे में, मेरे कंधों और पीठ पर छोटे उभार निकल आते थे, जिन्हें हर कुछ महीनों में गर्मी देने की ज़रुरत होती थी। मैंनें अपनी त्वचा को आशीषित करने का फैसला किया। पहले पहले मैंने केवल उसे यीशु के नाम में आशीषित किया। परन्तु फिर मैंने कहीं पर त्वचा की प्रकृति के बारे में कुछ पढ़ा जिसने मेरे दृष्टिकोण को ही बदल दिया। मुझे ऐहसास हुआ कि, हालांकि मैं इसमें ढंका हुआ हूं, मैं अपने शरीर के सबसे बड़े अंग के बारे में ज़्यादा नहीं जानता। मैंने उसके बारे में बात की थी, लेकिन मैंने उससे बात नहीं की थी। और मुझे नहीं लगता कि मैंने कभी उसके विषय में कुछ अच्छा कहा होगा – इसके विपरित मैंने शिकायत ही की थी। मैं आभारहीन था।

लेकिन त्वचा अद्‌भुत होती है। यह वातानुकूलक और सफाई रखने की प्रणाली है। यह शरीर को आक्रमण करने वाले जन्तु ओं से बचाती है और अपने आपको चंगा भी कर लेती है। यह हमारे सभी अंदरुनी भागों को ढंकती और सुरक्षित रखती है और वह भी बड़ी सुन्दरता से।

> धन्यवाद प्रभु त्वचा के लिए – झुरियों और बाकि सब के साथ। तुझे आशीषित करता हूं, त्वचा।

कई महीनों तक इस तरह की आशीष के बाद, मेरी त्वचा अब लगभग ठीक हो चुकी है, लेकिन मुख्य बात यह है कि जब मैं इसकी कद्र करने और इसके लिए धन्यवाद देने लगा। यह अद् भुत और भयानक रीति से बनाई गई है। एक अच्छा सबक था। शिकायद करना परमेश्वर के राज्य को दूर करता है, धन्यवाद देना उसे आकर्षित करता है।

ये एक गवाही है मेरे दोस्त, डेविड गुडमन कीः

> कुछ महीने पहले मैंने रिचर्ड को आशीष के विषय पर प्रचार करते सुना – एक कुछ कुछ अहानिकर विषय, परन्तु वह प्रतिध्वनित होता है क्योंकि जिस दृष्टिकोण से वह लाया गया था। परिणाम यह था कि आशीष को कुछ ऐसा होने की ज़रुरात नहीं हैं जिसके लिए हम परमेश्वर से मांगते हैं, परन्तु हम मसीहियों के पास यह अधिकार है, यदि ज़िम्मेदारी नहीं तो, कि हम इस पापमय दुनिया में जाएं, मसीह के राजदूतों की तरह, अन्य लोगों के जीवनों पर प्रभाव डालें परमेश्वर के राज्य के लिए। हम जाकर उन्हें उनके जीवनों में आशीष देते हैं, और उसी के साथ मसीह को उनपर प्रकट करते

हैं। यह विचार ठीक है जब कोई इसे दूसरों के विषय में देखता है, परन्तु इस विचार ने मुझमें रुकावट पाई जब मुझे अपने आपको आशीष करने के बारे में सोचना पड़ा। मैं इस धारणा को झाड़ नहीं पा रहा था कि मैं योग्य नहीं हूं, कि मैं स्वार्थी हूं, कि परमेश्वर को हलके से ले रहा हूं। मेरे विचार बदल गए जब मैंने देखा कि हम, मसीही, एक नई सृष्टि हैं, नया जन्म पाए हैं और उन उद्देश्यों को पूरा करने के लिए बनाए गए हैं जो परमेश्वर ने हमारे लिए नियोजित किए है। ऐसा होने से, अब जो शरीर हमारे पास हैं हमें उसे मुल्यवान जानकर उसकी देखभाल करनी है – आखिरकार, अब हम, पवित्र आत्मा के निवास करने का मंदिर हैं।

इसके बाद, मैंने एक लघु प्रयोग की शुरुआत की – हर दिन जब मैं जागता, मैं अपने शरीर के एक अंग को आशीषित करता, उसके कार्य–प्रदर्शन के लिए धन्यवाद देता; कोई काम ठीक से करने के लिए उसकी सराहना करता। मैं अपनी अंगुलियों की प्रशंसा करता उनके फुरतीलेपन के लिए, उनसे अपेक्षित सारे काम करने के लिए उनके हुनर के लिए और अधिक। मैं अपने पैरों की सराहना करता और धन्यवाद देता कि कितने परिश्रम के साथ वे मुझे उठाकर कर ले जाते हैं, उनकी गति के लिए, एकजुट होकर कार्य करने की योग्यता

के लिए। मैं अपने शरीर का धन्यवाद देता कि सारे अंग एक साथ काम कर रहे हैं। इसमें से एक अजीब बात निकल कर आई।

क्योंकि मैं शारीरिक और मानसिक तौर पर इतना बेहतर मेहसूस कर रहा था, मैंने अपने विचारों को मेरी बाहं के उस निचले हिस्से में दर्द की ओर मोड़ा जो कई महीनों से हो रहा था – वो दर्द जो हड्डी में मेहसूह होता और कुछ देर उस हिस्से को मसलना पड़ता ताकि लगातार टीस मारने वाले दर्द से थोड़ी राहत मिल सके। मैंने इस क्षेत्र पर ध्यान केंद्रित किया, अपने शरीर की सराहना करते हुए, उसकी चंगाई करने की योग्यता के लिए, उसपर फैंके जाने वाली वस्तुओं का सामना करने के लिए उसकी दृढ़ता के लिए, जब अन्य भाग सहायता करता है जब किसी एक भाग की मरम्मत हो रही होती है। कुछ तीन महीनों बाद एक सुबह जब मैं जागा और ऐहसास किया कि मेरी बांह में अब वह दर्द नहीं रह गया था; वह पीड़ा पूरी तरह गायब हो चुकी थी ओर दोबारा कभी लौट कर नहीं आई।

मुझे ऐहसास हुआ कि, हालांकि निश्चित रुप से एक समय और स्थान है किसी दूसरे के लिए विश्वास के द्वारा चंगाई का वरदान इस्तेमाल करने का, लेकिन एक और द्वार हमारे लिए खुला है अपने आपके लिए

चंगाई का वरदान इस्तेमाल करने का। यह एक दीनता में सीखा सबक है, कि हम विश्वास कर सकते हैं जो परमेश्वर ने हमारे नए शरीरों को दिया है, कि हम आत्म –विश्वास के साथ जीवन के एक नए और जीवित तरीके में आगे बढ़ सकते हैं।

अपने घर, विवाह और बच्चों को आशीषित करना

आपका मकान – घर को आशीषित करने का एक नमूना

यह एक अच्छा विचार है कि आप अपने घर को आशीषित करें और साल में कम से कम एक बार उस आशीष का नविकरण करें। आपके रहने के स्थान को आशीषित करने में शामिल है मसीह यीशु में आपके अधिकार का इस्तेमाल करते हुए अपने स्थान को प्रभु के प्रति समर्पित और शुद्ध करना। पवित्र आत्मा को निमंत्रण देना, और जो भी परमेश्वर का नहीं है उसे निकल जाने के लिए विवश करना।

एक घर केवल ईंट और गारा नहीं होता – उसका एक व्यक्तित्व भी होता है। जिस प्रकार आप अपने घर में अब कानूनन प्रवेश कर सकते हैं, पहले किसी और के पास यह कानूनन अधिकार था, या आपसे पहले आपकी संपत्ति पर। उस स्थान में ऐसे काम हुए होंगे जिनसे या तो आशीषें या फिर श्राप आए होंगे। चाहे जो भी हुआ हो, यह आपका अधिकार है जो निश्चित करें

गा कि इस समय से आगे यहां का आत्मिक माहौल कैसा होगा। यदि पूर्व के मालिक से कोई शैतानी गतिविधी अभी भी चली आ रही है, तो आप ज़रुर इसे भांप लेंगे – और इन ताकतों को बाहर निकालना आपके हाथ में है।

हां बिलकुल, आपको इस बात पर ध्यान देना होगा कि आप किन शैतानी ताकतों को बेइरादे से अपने घर में खुद प्रवेश दे रहे हैं। क्या आपके पास अधर्मी चित्रकारी, कलाकृतियां, पुर्स्त कें, संगीत या ड्यडस हैं? कौनसे टीवी कार्यक्रमों को आप प्रवेश देते हैं? क्या आपके घर में पाप है?

यह एक साधारण आशीष है जो आप अपने घर के एक कमरे से दूसरे कमरे में जाते हुए बोल सकते हैं:

> मैं इस मकान को आशीष देता हूं, जो हमारा घर है। मैं घोषणा करता हूं कि यह घर परमेश्वर का है, मैं इसे परमेश्वर के लिए पवित्र करता हूं और यीशु मसीह की प्रभुता के अधीन ले आता हूं। यह एक आशीष का घर है।
>
> मैं इस घर से प्रत्येक श्राप को तोड़ता हूं यीशु के लहू से। मैं हर एक दुष्टात्मा पर अधिकार लेता हूं यीशु के नाम में और मैं उन्हें इसी समय निकल जाने की और

दोबारा कभी लौटकर ना आने की आज्ञा देता हूं। मैं कलह, फूट और मतभेद की प्रत्येक आत्मा निकालता हूं। मैं दरिद्रता की आत्मा को निकालता हूं।

आ पवित्र आत्मा और उस सब वस्तु को निकाल दे जो तेरी नहीं है। इस घर को अपनी उपस्थिति से भर दे। तेरा फल आने देः प्रेम, आनंद, शांति, धीरज, कृपा, भलाई, विश्वास,नम्रता और संयम। मैं इस घर को भरपूर शांति और भरपूर मात्रा में प्रेम से आशीषित करता हूं। यहां जो भी आए तेरी उपस्थिति का ऐहसास करे और आशीषित हो जाए। यीशु के नाम में, आमीन।

मैं अपनी संपत्ति की सीमाओं का चक्कर लगा चुका हूं। उसे आशीषित करते हुए और आत्मिक रुप से यीशु मसीह का लहू लगाते हुए, संपत्ति की सुरक्षितता के लिए, और अंदर रहने वाले लोगों के लिए, हर दुष्टता से और प्राकृतिक आपदा से।

आपका विवाह

हमारा ऐसा विवाह हो सकता है जिसे हम आशीषित करते हैं या हमारा ऐसा विवाह हो सकता है जिसे हम श्रापित करते हैं।

जब मैंने पहली बार इस वर्णन को कैरी कर्कवुड द्वारा लिखित पुस्तक 'द पावर ऑफ ब्लेसिंग' में पढ़ा, तो मैं थोड़ा चौंक गया था। क्या यह सच है?

मैंने इस पर काफी विचार किया है, और मैं विश्वास करता हूं कि ये शब्द बहुत हद्द तक सही हैं – हमारी शादी में या बच्चों में कोई भी नाखुशी है, तो वह हमारे उनको आशीषित ना करने के कारण है! हम परमेश्वर की हमारे प्रति उद्देश्यित भलाई को सम्पूर्ण मात्रा मे ग्रहण करते हैं – लम्बा जीवन और स्वस्थ संबंध को मिलाकर। हम भागीदार या सहभागी बनते हैं, जिसके साथ और जिसको हम आशीषित करते हैं।

श्रापों के प्रति सावधान रहें। पति और पत्नी एक दूसरे को इतनी अच्छी तरह जानते हैं। हम सभी 'गर्म बटनों' को पहचानते हैं। क्या आप कुछ ऐसा कहते हैं? क्या ऐसा कुछ आपके ऊपर बोला गया है? 'तुम कभी नहीं सुनते', 'तुम्हारी याद्‌दाश्त बहुत कमज़ोर है', 'तुम खाना नहीं बना सकती', 'तुम बेकार हो ... इसमें' यदि अक्सर कहा जाता है, तो उस प्रकार के शब्द श्राप बन जाते हैं और सच भी हो जाते हैं।

श्राप नहीं, आशीष दें। याद रखें, यदि आप श्राप देते हैं (मृत्यु के शब्द बोलते हैं) तो परमेश्वर जो आशीष आपको देना चाहता है आप उसको नहीं पा सकेंगे। उससे भी बुरा यह होगा, श्राप

देना हम पर उससे अधिक प्रभाव करता है जिसे हम श्राप देते है। क्या यह एक कारण हो सकता है कि प्रार्थनाओं का जवाब नहीं मिलता?

आशीष देना सीखना एक नई भाषा सीखने जैसा हो सकता है – शुरुआत में अनाड़ी जैसा। उदाहरण के लिए,

> निकोल, मैं तुम्हें आशीष देता हूं। मैं परमेश्वर की सारी भलाई तुमपर मुक्त करता हूं। तुम्हारे जीवन के लिए परमेश्वर के उद्देश्यों की पूर्ति हो।
>
> मैं आशीषित करता हूं तुम्हारे लोगों से मिलने और प्रेम करने के वरदान को, और तुम्हारे दिली अतिथि सत्कार के वरदान को भी। मैं तुम्हारे लोगों को आरामदायक महसूस कराने के वरदान को आशीषित करता हूं। मैं ऐलान करता हूं कि तुम परमेश्वर की सत्कारिणी हो, कि तुम लोगों को वैसे ही स्विकार करती हो जैसे परर्म ेश्वर करता है। मैं तुम्हें ऊर्जा से आशीषित करता हूं ताकि तुम इसे अपने जीवन के अंतिम पड़ाव में भी करती रह सको। मैं तुम्हें स्वास्थ्य और लम्बे जीवन से आशीषित करता हूं। मैं तुम्हें हर्ष के तेल से आशीषित करता हूं।

आपके बच्चे

बच्चों को आशीषित करने के कई तरीके हैं। मैं अपनी पोती को, जो कि चार साल की है, इस तरह आशीषित करता हूं:

> ऐशली, मैं तुम्हारे जीवन को आशीषित करता हूं। तुम परमेश्वर की अद्‌भुत स्त्री बनो। मैं तुम्हारे दिमाग को स्वस्थ रहने के लिए आशीषित करता हूं और कि सभी फैसलों में तुम्हारे पास बुद्धि और सूझ –बूझ हो। मैं तुम्हारे शरीर को विवाह होने तक पवित्र रहने, और स्वस्थ और मज़बूत रहने की आशीष देता हूं। मैं तुम्हारे हाथों और पैरों को परमेश्वर द्वारा नियोजित काम करने के लिए आशीषित करता हूं। मैं तुम्हारे मुंह को आशीषित करता हूं। वह सत्य और प्रोत्साहन के शब्द बोले। मैं तुम्हारे हृदय को प्रभु के प्रति सच्चा रहने के लिए आशीषित करता हूं। मैं तुम्हारे भावी पति और भविष्य में होने वाले बच्चों को भरपूरता और एकता से आशीषित करता हूं। मुझे तुम्हारे बारे में सबकुछ पसंद है, ऐशली, और मुझे तुम्हारा पापा होने पर गर्व है।

बिलकुल, यदि एक बच्चा किसी क्षेत्र में संघंष कर रहा हो तो हम उसे उपयुक्त तरीके से आशीषित करेंगे। यदि उन्हें स्कुल में पढ़ाई करना मुश्किल लगता है, तो उनके दिमाग को पाठ को याद रखने और शिक्षा के पीछे की परिकल्पना को समझने

के लिए आशीषित कर सकते हैं; यदि उनको अन्य बच्चे डरा –धमकाते हैं, तो हम उन्हें आशीषित कर सकते हैं कि वे बुद्धि और डील –डौल में बढ़ें और उन्हें परमेश्वर और अन्य बच्चों का समर्थन मिले; और ऐसे ही।

कई अद्भुत वस्तुओं में से एक जो एक पिता अपने बच्चों को दे सकता है वह है एक पिता की आशीष। मैने इसके विषय में फ्रैंक हॅम्मण्ड की पुस्तक, 'द फादर्स ब्लेसिंग', से सीखा था, जो कि एक बहुत ही बढ़िया पुस्तक है। एक पिता की आशीष के बिना सदा किसी कमी का ऐहसास होता है – एक खालीपन उत्पन्न हो जाता है जिसे कोई और वस्तु नहीं भर सकती। पिताओं, अपने बच्चों पर हाथ रखो और परिवार के अन्य सदस्यों पर भी, (उदाहरण –उनके सिर या कंधों पर हाथ रखे) और अक्सर उन्हें आशीष दें। परमेश्वर जो आपके और उनके, दोनों के लिए करने वाला है उसकी खोज करें।

जब भी मैं इस संदेश को बांटता हूं, मैं व्यस्क पुरुष और स्त्रियों से पूछता हूं, 'यहां पर कितने ऐसे लोग हैं जिनके पिता ने उनपर हाथ रखकर उन्हें आषीशीषित किया था?' बहुत कम लोग अपने हाथ उठाते हैं। फिर मैं प्रश्न को घुमा देता हूं: 'यहां पर कितने लोग ऐसे हैं जिनपर उनके पिता ने हाथ रखकर उन्हें आशीषित कभी नहीं किया?' लगभग सभी के हाथ ऊपर उठ जाते हैं।

फिर मैं उनसे पूछता हूं कि क्या वे मुझे उस समय के लिए अपना आत्मिक पिता बनने देंगे – एक विकल्प के रुप में – ताकि मैं, पवित्र आत्मा की सामर्थ में, उन्हें वह आशीष दे सकूं जो उन्होंने कभी नहीं पाई। और प्रतिक्रिया बहुत ज़ोरदार रही हैः आंसू, छुटकारा, आनंद, चंगाई। बस अद्‌भुत!

यदि आप एक पिता की आशीष के लिए तरसते हैं, जैसे मैं तरसता था, तो नीचे दिया हुआ ऊंची आवाज़ में अपने आप से बोलिए। यह वह आशीष है जो मैंने फ्रैंक हैम्मण्ड की पुस्तक से अपनाई है।

एक पिता की आशीष

मेरे बच्चे, मैं तुझसे प्यार करता हूं! तुम खास हो। तुम परमेश्वर की ओर से एक वरदान हो। मैं परमेश्वर का धन्यवाद देता हूं कि उसने मुझे तुम्हारा पिता होने की अनुमति दी। मुझे तुमपर गर्व है और मैं तुमपर आनंदित होता हूं। और अब मैं तुम्हें आशीष देता हूं।

मैं दिल के सभी ज़ख्मों की चंगाई से तुम्हें आशीषित करता हूं – ठुकराए जाने के ज़ख्म, तुम पर ध्यान न दिए जाने और गाली-गलौज करने के ज़ख्म जो तुमने सहे

हैं। यीशु के नाम में, तुम्हारे ऊपर बोले गए प्रत्येक सभी बेरहम और अनुचित शब्दों की सामर्थ को मैं तोड़ता हूं।

मैं तुम्हें भरपूर शांति से आशीषित करता हूं, वह शांति जो केवल शांति का राजकुमार ही दे सकता है।

मैं तुम्हारे जीवन को फलवंत होने के लिए आशीषित करता हूं: अच्छा फल, भरपूर फल और टिकाऊ फल।

मैं तुम्हें सफलता से आशीषित करता हूं। तुम सिर हो नाकि पूंछ, तुम ऊपर हो नाकि नीचे।

मैं उन वरदानों को आशीषित करता हूं जो परमेश्वर ने तुम्हे दिए हैं। मैं, अच्छे निर्णय लेने और मसीह में अपने क्षमता के शिखर तक पहुंचने के लिए, तुम्हे ज्ञान से आशीषित करता हूं।

मैं तुम्हें आशीषित करता हूं भरपूर समृद्धता से, ताकि तुम दूसरों के लिए आशीष हो सको।

मैं तुम्हें आशीषित करता हूं आत्मिक प्रभाव से, क्योंकि तुम जगत की ज्योति और पृथ्वी का नमक हो।

मैं तुम्हें आशीषित करता हूं आत्मिक समझ की गहराई होने और प्रभु के साथ करीबी संबंध रखने के लिए। तुम डगमगाओगे या लड़खड़ाओगे नहीं, क्योंकि परमेश्वर का वचन तुम्हारे पांव के लिए दीपक और मार्ग के लिए ज्योति होगा।

मैं तुम्हें अच्छे दोस्तों से आशीषित करता हूं। तुमपर परमेश्वर और मनुष्य की कृपादृष्टि बनी रहे।

मैं तुम्हें आशीषित करता हूं प्रचुर मात्रा में और भरपूर प्रेम से, जिसमें से तुम परमेश्वर के अनुग्रह को दूसरों को बांटोगे। तुम परमेश्वर के आरामदायक अनुग्रह से दूसरों में सेविकाई करोगे। तुम आशीषित हो, मेरे बच्चे! तुम मसीह यीशु में सभी प्रकार की आत्मिक आशीषों से आशीषित हो। आमीन!

एक पिता की आशीष के महत्व के प्रति गवाही

पिता की आशीष से मैं बदल गया। जब से मैंने जन्म लिया है मैंने ऐसे संदेश का प्रचार नहीं सुना था। अब तक भी, मेरे जीवन में बोलने के लिए मेरा एक शारीरिक पिता नहीं था। परमेश्वर ने तुम्हारा इस्तेमाल किया, रिचर्ड, मुझे उस स्थान पर लाने के लिए जहां मैं प्रार्थना

करुं और एक आत्मिक पिता के द्वारा मेरे जीवन पर पिता की आशीष की घोषणा को पा सकूं। जब तुमने मेरे जीवन में एक पिता–से–पुत्र को, वाली आशीष का ऐलान किया, मेरे हृदय को सांत्वना मिला और अब मैं खुश और आशीषित हूं।

पास्टर वायक्लिफ अलूमासा, केन्या

भविष्यवाणी लाने के द्वारा दूसरों को आशीषित करना

हालांकि, मैंने आपको शुरु करने के लिए, उदाहरण दिए हैं, यह अच्छा होगा कि आप पवित्र आत्मा से मांगें कि वह आपको मदद करे परमेश्वर के मुख जैसा होने में, परमेश्वर के उद्देश्य का या एक 'विशेष समय में सही वचनों' (सही समय पर सही वचन) का ऐलान और घोषणा करने में। यदि स्थिति अनुमति दे तो, अन्य भाषा में प्रार्थना या आराधना करने के द्वारा अपनी आत्मा को सक्रीय करें।

आप ऊपर दिए विभिन्न नमूनों में से किसी एक का इस्तेमाल कर सकते हैं, परन्तु पवित्र आत्मा से दिशा पाने की आशा करें। उसके दिल की धड़कन को सुनें। आप शायद रुक रुक के शुरुआत करें, परन्तु आप बहुत जल्द परमेश्वर के हृदय को पकड़ लेंगे।

अपने काम करने के स्थान को आशीषित करना

भाग 1 की ओर मुड़िए और, मेरे अनुभव से दिए, मेरे उदाहरण का इस्तेमाल अपनी परिस्थिति में कीजिए। परमेश्वर जो आपको दिखाए उसके प्रति सजग रहिए – वह आपका दृष्टिकोण बदल सकता है। आशीष किसी प्रकार का एक जादुई मंत्र नहीं है। उदाहरण के लिए, परमेश्वर लोगों से वह नहीं खरिदवाएगा जिसकी ज़रुरत नहीं या जो वे नहीं चाहते। नाही परमेश्वर आलस और बेइमानी को आशीषित करेगा। परन्तु यदि आप उसकी शर्तों पर खरे उतरते हैं, तो आपको अपने व्यवसाय को आशीषित करना चाहिए – कि परमेश्वर आपको मदद करे उसे वर्तमान कि स्थिति से वहां ले जाने के लिए जहां वह चाहता है। उसकी सलाह के या उन लोगों की सलाह को सुनिए जिन्हें वह आपके पास भेजेगा। खुले रहिए। परन्तु उसकी कृपा की अपेक्षा भी करें, क्योंकि वह आपसे प्रेम करता है और आपकी सफलता चाहता है।

मैंने यह गवाही बेन फौक्स से प्राप्त की हैः

> संपत्ति के व्यवसाय वाले, मेरे काम में पिछले कुछ सालों मे बदलाव आया है और मेरे अपने व्यापार में काफी मंदी आई है। मैं कई लोगों के पास अपने काम के लिए प्रार्थना करवाने गया क्योंकि मेरा काम इस हद्द तक घट गया था कि मैं चिंतित और व्याकुल हो गया था।

लगभग उसी समय, 2015 की शुरुआत में, मैंने श्रीमान ब्रंटन की सन्देश शुंखला सुनी जिसमें उन्होने अपने काम, व्यवसाय, परिवार और अन्य क्षेत्रों को आशीषित करने के बारे में बताया था। उस समय तक, मेरी प्रार्थ नाओं का केंद्र था इन क्षेत्रों मे परमेश्वर से मदद मांगने का। अपने आप आशीष बोलने का विचार मुझे सिखाया नहीं गया था, परन्तु मैं अब यह देख सकता हूं कि इसके बारे में सम्पूर्ण बाइबल में लिखा हुआ है, और मैं जानता हूं कि परमेश्वर हमें बुलाता है, और उसने हमें अधिकार दिया है, यीशु के नाम में ऐसा करने के लिए। तो मैं अपने काम को आशीषित करने लगा – उसपर परमेश्वर का वचन बोलने और उसके लिए परमेश्वर को धन्यवाद भी देने लगा। मैंने हर सुबह अपने काम को आशीषित करना ज़ारी रखा और अपने नए व्यवसाय के लिए उसको धन्यवाद देना भी, उससे मांगते हुए कि वह नए ग्राहक भेजे जिनकी मैं मदद कर सकूं।

अगले बारह महीनों में, मेरे काम का भार महत्वपूर्ण तरीके से बढ़ गया, उस समय के बाद से कभी कभी मुझे इतना सारा काम संभालना कठिन भी लगा है। मैंने सीखा कि अपने रोज़मर्रा के काम में परमेश्वर को शामिल करने का एक तरीका है और अपने काम को आशीषित करना उसकी बुलाहट का एक भाग है।

इसलिए इसका सारा श्रेय मैं परमेश्वर को देता हूं। मैं अपने दिन भर के काम में भी पवित्र आत्मा को आमंत्रित करने लगा, ज्ञान और रचनात्मक विचार मांगते हुए। विशेषकर, मैंने यह देखा है कि जब मैं अपने काम की निपुणता में पवित्र आत्मा की मदद मांगता हूं, तो ज़्यादातर मेरा काम अपेक्षित समय से पहले ही पूरा हो जाता है।

मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि आशीष की शिक्षा, और उ से कैसे करना है, कई कलीसियाओं द्वारा भुलाया जा चुका है, क्योंकि मैं पाता हूं कि जब मैं अन्य मसीहियों से बात करता हूं तो वे इसके बारे में अनजान होते हैं। मेरे काम को आशीष देना मेरी रोज़र्मा कि आदत बन गई है, और दूसरे लोगों को आशीषित करना भी। मैं अपेक्षा पूर्वक लोगों कि स्थितियों मे फल की आशा भी करता हूं, जब मैं उन्हें आशीषित करता हूं, परमेश्वर के वचन के अनुसार और यीशु के नाम में।

एक समाज को आशीषित करना

मैं यहां पर सोच रहा हूं एक कलीसिया के बारे में – या किसी समान संस्था के बारे में – उस समाज को आशीषित करते हुए जहां वह सक्रिय है।

...........(समाज) के लोगों, हम आप सब को यीशु के नाम में आशीषित करते हैं परमेश्वर को जानने के लिए, आपके जीवन के लिए उसके उद्देश्य के जानने के लिए, और आप में से प्रत्येक पर, आपके परिवारों पर और आपके जीवन की सभी स्थितियों पर, उसकी आशीष को जानने के लिए।

हम..........(समाज) में प्रत्येक घराने को आशीषित करते हैं। हम प्रत्येक विवाह को आशीषित करते हैं और परिवार के विभिन्न पीढ़ियों के सदस्यों के संबंधों को आशीषित करते हैं।

हम आपके स्वास्थ्य और धन को आशीषित करते हैं।

हम आपके हाथों से किए जाने वाले काम को आशीषित करते हैं। हम उस प्रत्येक भली परियोजना को आशीषित करते हैं जिसमें आप शामिल हैं। वे समृद्ध हों।

हम आशीषित करते हैं आपके स्कूलों के विद्यार्थियों कों, हम उन्हें आशीषित करते हैं वह सीखने और समझने के लिए जो उन्हें सिखाया जाता है। वे ज्ञान और डीलडौल में बढ़ें, और परमेश्वर और मनुष्य की कृपा पाने में भी। हम शिक्षकों को आशीषित करते हैं और प्रार्थना करते

हैं कि स्कूल एक सुरक्षित और स्वस्थ स्थान होंगे, जहां परमेश्वर और यीशु के बारे में बेझिझक सिखाया जा सके।

हम उन सभी लोगों के दिलों से बोलते हैं जो इस समाज में हैं। हम उन्हें पवित्र आत्मा के उकसाने के प्रति सजग रहने और परमेश्वर की आवाज़ के प्रति अधिक क्रियाशील रहने की आशीष देते हैं। हम उ न्हें परमेश्वर के राज्य की भरपूरी, जिसका हम यहां (कलीसिया में) अनुभव करते हैं, से आशीषित करते हैं।

बिलकुल, इस प्रकार की आशीष, जैसा समाज है उस प्रकार से करके दी जानी चाहिए। यदि वह किसानों का समाज है तो आप भूमि और पशुओं को आशीषित करेंगे, यदि उस समाज में बेरोज़गारी आम है ते स्थानिक व्यवसायों को आशीषित करें ताकि वे नौकरियां उत्पन्न कर सकें। आशीष का लक्ष्य ज़रुरत को बनाएं। इसके बारे में चिंता ना करें कि वे उसके काबिल हैं या नहीं! लोग अपने दिलों मे महसूस करेंगे कि आशीष कहां से आई है।

भूमि को आशीषित करना

उत्पत्ति में, हम परमेश्वर को मनुष्यजाती को आशीषित करते

हुए देखते हैं, उन्हें भूमि और सभी जीवों पर शासन देते हुए, और उन्हें फलवंत और बहुगुणित होने की आज्ञा देते हुए। यह मनुष्यजाती की मूल की महिमा का एक पहलू था।

हाल ही में, जब मैं केन्या मे था, मैं एक ऐसे मिशनरी से मिला जिसने सड़क के बच्चों को लेकर उन्हें खेती –बाड़ी के बारे में सिखाया। उसने मुझे एक ऐसे मुसलमान समाज के बारे मे बताया जो दावा करते थे कि उनकी भूमि शापित है, क्योंकि वहां कुछ भी नहीं उगता था। मेरे मिशनरी मित्र और उसके मसीही समाज ने उस भूमि को आशीषित किया और वह उ पजाऊ बन गई। यह एक ऊर्जस्वी प्रदर्शन है आशीष द्वारा परमेश्वर के सामर्थ्य के मुक्त होने का।

केन्या में, मैंने उस अनाथालय के, जिसे हमारी कलीसिया मदद करती थी, इर्दगिर्द भी चक्कर लगाते हुए उसके फलों के बागों, उसके बागीचों, उनकी मुर्गियों और गायों को आशीषित किया। (मैंने अपने स्वयं के फल वृक्षों को भी आशीषित किया है और बहुत बड़े परिणाम देखे हैं।)

जौफ़ विक्लुण्ड फिलिपींस की एक कलीसिया की कहानी बताते हैं जिसने गंभीर अकाल के समय में भूमि के एक टुकड़े को आशीषित किया। उनकी भूमि ही एकमात्र स्थान जहां बारिश होती थी। पड़ोस के किसान, उनकी कलीसिया की भूमि के

आसपास के गड्‌ढों से, अपने धान के लिए पानी लेने आया करते थे। यह एक और असामान्य चमत्कार है जिसमे आशीष के द्वारा परमेश्वर की कृपा प्रकट हुई।

प्रभु को आशीष देना

हालांकि मैंने इसे अंत में रखा है, वास्तव में इसे पहले आना चाहिए। मेरे इसे अंत में रखने का कारण यह है कि यह 'परर्मे श्वर के उद्देश्यों और प्रसन्नता को किसी व्यक्ति या स्थिति पर बोलने' के नमूने में उपयुक्त नहीं बैठता। इसके विपरित, यह एक "खुश करने" का विचार है।

हम परमेश्वर को कैसे आशीषित करते हैं? इसे करने का एक प्रदर्शन भजनसंहिता 103 में हैः

> हे मेरे मन, यहोवा को धन्य कह...और उसके किसी उ पकार को न भूलना...

तुम्हारे मन के प्रति प्रभु के क्या उपकार हैं? वह क्षमा करता, चं गा करता, बचाता, मुकुट बांधता, तृप्त करता, नया करता...है

मैंने, जो प्रभु मुझमें और मेरे द्वारा करता है उसके लिए, प्रतिदिन उसका धन्यवाद देने की, प्रथा बना ली है। वह जो कुछ भी है मेरे लिए उसके लिए मैं उसे याद करता और उसकी सराहं

ना करता हूं। यह उसे आशीषित करता है, और मुझे भी! आपको कैसा लगता है जब एक बच्चा आपको धन्यवाद देता या सराहता है, उसके लिए जो आपने कहा या किया है? यह आपके हृदय को आनंदित कर देता है और आप उसे दोबारा करना चाहते हैं।

प्रयोग

- किसी ऐसे व्यक्ति के बारे में सोचिए जिसने आपको चोट पहुंचाई है – ज़रुरी हो तो क्षमा करें, परन्तु इससे आगे बढ़ते हुए उन्हें आशीष दें।

- आपके नियमित रुप से बोले जाने वाली बातों पर ध्यान दें जब आप दूसरों को या अपने आपको श्राप देते हैं। आप इसके बारे में क्या करने वाले हैं?

- अपने आपके लिए, अपने पति/पत्नी, और अपने बच्चों के लिए आशीष लिखें।

- किसी अन्य व्यक्ति के साथ मिलिए और उनके लिए भविष्यवाणी करने की अपेक्षा कीजिए। उस व्यक्ति के लिए परमेश्वर से कुछ विशेष और प्रोत्साहन भरा मांगिए। सामान्य बातों से शुरुआत कीजिए, उदाहरण के लिए, 'मैं तुम्हें यीशु के नाम में आशीषित करता हूं। तुम्हारे जीवन में परमेश्वर के योजनाएं और उद्देश्य परिपूर्ण हों...' और रुकें, धीरज के साथ। याद रखें, आपके पास मसीह का

मन है। फिर अदला–बदली कीजिए और दूसरे व्यक्ति को आपको भविष्यवाणी के साथ आशीष देने का मौका दीजिए।

- अपनी कलीसिया में, अपने क्षेत्र को चंगा करने के लिए एक संयुक्त आशीष समूह को तैयार कीजिए, या आपकी वर्तमान की सेविकाई को आशीषित कीजिए।

एक मसीही कैसे बनें

यह पुस्तिका मसीहियों के लिए लिखी गई थी। 'मसीही' से मेरा मतलब केवल उनसे ही नहीं है जो अच्छा जीवन जीते हैं। मेरा मतलब उनसे है जिन्होंने परमेश्वर के आत्मा द्वारा 'नया जन्म' पाया है और जो मसीह से प्रेम करते और उसका अनुसरण करते हैं।

लोग तीन भागों मे बनाए गए हैं: आत्मा, मन और शरीर। आत्मा को बनाया गया था पवित्र परमेश्वर, जो कि आत्मा है, को जा नने और उसके साथ संगति करने के लिए। मनुष्य परमेश्वर के साथ घनिष्टता रखने के लिए बनाए गए थे, आत्मा से आत्मा। परन्तु, मानवी पाप हमें परमेश्वर से अलग करता है, जिसके परिणाम स्वरुप हमारे आत्मा की मृत्यु और परमेश्वर से संबंध का अंत होता है।

इसके फलस्वरुप, लोग अपने मनों और शरीरों से ही काम लेते हैं। मन में बुद्धि, इच्छा और भावनाओं का समावेश है। इसका परिणाम दुनिया में स्पष्ट रुप से दिखाई देता है: स्वार्थ, घमण्ड, लालच, भूख, युद्ध, और सच्ची शांति और अर्थ की कमी।

परन्तु परमेश्वर के पास मनुष्यजाती को छुड़ाने के लिए योजना थी। पिता परमेश्वर ने अपने पुत्र, यीशु को भेजा, जो स्वयं भी परमेश्वर है, पृथ्वी पर मनुष्य बनकर आने के लिए ताकि हमें बता सके कि परमेश्वर कैसा है – 'यदि तुमने मुझे देख लिया है तो मेरे पिता को भी देख लिया है' – और हमारे पापों के परिणाम को अपने ऊपर उठाने के लिए। क्रूस पर उस भयानक मृत्यु की योजना पहले से बनाई गई थी और पुराने नियम में विस्तार से इसकी पूर्व—सूचना दी गई थी। उसने मनुष्यजाती के पाप की कीमत चुकाई। दैवी न्याय संतुष्ट हो गया था।

परन्तु फिर परमेश्वर ने यीशु को मृत्यु से जीवित किया। यीशु वादा करता है कि जो उसमें विश्वास करते हैं वे भी मृत्यु से जीवित किए जाएंगे और अनंतकाल में उसके साथ रहेंगे। अब वह हमें उसका आत्मा देता है, एक निश्चितता के रुप में, ताकि हम हमारे बाकि के इस सांसारिक जीवन में उसे जानें और उ सके साथ चलें।

तो यहां हमारे पास यीशु मसीह के सुसमाचार का सार है। यदि आप अपने पापों का अंगिकार करते हैं और उन्हें कबूल करते हैं, यदि आप विश्वास करते हैं कि यीशु ने क्रुस पर आपका दण्ड अपने ऊपर ले लिया और यह कि वह मृत्यु से जीवित किया गया, तो उसकी धार्मिकता आपके खाते में डाली जाएगी। परमेश्वर आपकी मानवी आत्मा को पुर्नजीवित करने के लिए

अपना पवित्र आत्मा भेजेगा – नया जन्म पाने का यही अर्थ है – और आप घनिष्टता से परमेश्वर को जान सकेंगे और उसके साथ संगति रख सकेंगे – जिसके लिए सर्वप्रथम उसने आपका निर्माण किया था! जब आपका भौतिक शरीर मरता है, मसीह आपको जीवित करेगा और एक महिमामय और अविनाशी शरीर देगा। वाह!

अब जबकि आप इस पृथ्वी पर मौजूद हैं, पवित्र आत्मा (जो कि स्वयं परमेश्वर है) आपमें कार्य करेगा (आपको साफ करने के लिए और चरित्र. में यीशु जैसा बनाने के लिए) और आपके द्वारा कार्य करेगा (दूसरों के लिए आशीष बनने के लिए)।

जो उसे ग्रहण ना करने का निर्णय लेते हैं जो यीशु ने चुकाया है, वे न्याय कि ओर जाएंगे उसके सम्पूर्ण परिणाम सहित। आप ऐसा नही चाहते।

आप इस प्रार्थना को कर सकते हैं। यदि आप सच्चाई से इसे करेंगे तो आपका नया जन्म होगा।

> प्रिय परमेश्वर तू जो स्वर्ग में है, मैं तेरे पास यीशु के नाम में आता हूं। मैं तेरे समक्ष यह अंगिकार करता हूं कि मैं पापी हूं। (अपने सारे पापों को कबूल करें।) मुझे मेरे पापों के लिए और जो जीवन मैने तेरे बिना जिया है उसके लिए, सच मे खेद है ओर मुझे तेरी क्षमा चाहिए।

मैं विश्वास करता हूं कि तेरे इकलौते पुत्र, यीशु मसीह, ने अपना बहुमूल्य लहू क्रूस पर बहाया और मेरे पापों के लिए मर गया, और अब मैं अपने पापों से मुड़ना चाहता हूं।

तूने बाइबल में कहा है (रोमियों 10:9) कि यदि हम घोषणा करें कि यीशु प्रभु है और अपने दिलों में विश्वास करें कि परमेश्वर ने यीशु को मृतकों में से जिलाया, तो हमारा उद्धार होगा।

इसी समय मैं यीशु को अपने मन का स्वामी मानता हूं। मैं विश्वास करता हूं की परमेश्वर ने यीशु को मरे हुओं में से जिलाया। इसी क्षण मैं यीशु मसीह को अपने व्यक्तिगत उद्धारकर्ता के रुप में स्वीकार करता हूं और, उसके वचन के अनुसार, इसी समय मेरा उद्धार होता है। धन्यवाद प्रभु मुझसे इतना प्रेम करने के लिए कि तू मेरे स्थान पर मरने के लिए तैयार हुआ। तू अद्‌भुत है, यीशु, मैं तुझसे प्रेम करता हूं।

अब मैं तुझसे मांगता हूं की अपने आत्मा के द्वारा मुझे वह व्यक्ति बनने में मदद कर जैसा तू चाहता था, समय की शुरुआत से पहले। अन्य विश्वासियों के और तेरे चुनाव की कलीसिया की ओर मेरी अगुवाई कर ताकि मैं तुझमें बढ़ सकूं। यीशु के नाम में, आमीन।

इस पुस्तक को पढ़ने के लिए धन्यवाद्।
मुझे गवाहियों को पाकर बहुत खुशी होगी की किस प्रकार आशीष ने आपके जीवन को परिवर्तित किया या उनके जीवनों को जिन्हें आपने आशीषित किया।
कृपया मुझे इसके द्वारा संपर्क करेः

richard@richardbruntonministries.org
www.richardbruntonministries.org

आशीष किसी व्यक्ति या स्थिति पर परमेश्वर के उद्देश्य और प्रसन्नता को बोलना है।

जब हम इसे विश्वास में करते हैं, तो हम परमेश्वर की समर्थ को कार्यरत करते हैं किसी व्यक्ति को (स्वयं को भी), या स्थिति को बदलने के लिए, जहाँ वे आज हैं से जहाँ परमेश्वर चाहता हैं वे हों।

प्रत्येक मसीही के पास अधिकार और सामर्थ है प्रभु के नाम में दूसरों को आशीषित करने और उनके जीवनों और स्थितियों को बदलता देखने का। आशीष की सामर्थ्य अलौकिक है; यह पवित्र आत्मा के उपस्थिति और कार्य हैं, आनंद, शांति, समृद्धि और सुरक्षा उपजाते हुए।

इस छोटी पुस्तक में, आप पाएँगे आशीष कैसे कार्य करती है और सीखेंगे उनको आशीषित कैसे करना है जो आपको श्राप देते या उकसाते हैं; आपके पति/पत्नी, आपके बच्चों, आपके घर और अपने आप को कैसे आशीषित करें; आपके कार्यालय, आपके देश और आपके समाज को – और परमेश्वर को भी - कैसे आशीषित करें ।

आप अपनी दुनिया को बदल सकते हैं।

HINDI VERSION